नेल्सन मंडेला
(कैदी से राष्ट्रपति बनने की कहानी)

नेल्सन मंडेला

(कैदी से राष्ट्रपति बनने की कहानी)

सुशील कपूर

विद्या विहार, नई दिल्ली

विषय-सूची

1. मंडेला का बचपन
2. किशोर मंडेला
3. हीलटाउन में
4. कॉलेज का जीवन
5. बड़े शहर में
6. राजनीति और प्यार
7. नेत्तृत्व की शुरुआत
8. संघर्श का बिगुल बजा
9. स्वाधीनता सेनानी
10. जुझारू मंडेला
11. लुका-छिप्पी का खेल
12. क्रन्तिकारी मंडेला
13. आजीवन कारावास
14. बंधन-मुक्त मंडेला
15. राष्ट्रपति मंडेला
16. विश्व शांतिदूत मंडेला
17. जीवन यात्रा

1

मंडेला का बचपन

> कानून ने मुझे अपराधी करार दिया। जो मैंने किया था, उसके लिए नहीं, मैं जिसके लिए संघर्ष कर रहा था, उसके लिए।
>
> *-नेल्सन मंडेला*

नेल्सन मंडेला नाम है सतत संघर्ष का, कठोर-से-कठोर यातनाएँ भी जिसके आत्मबल को कुचलने में नाकाम रहीं। जिसने साबित कर दिया कि यातनाओं का अंबार लगानेवाली बड़ी-से-बड़ी ताकत को भी जन-आकांक्षाओं की संगठित शक्ति के सामने झुकना पड़ता है। जिसके ज्वलंत भाषणों व लेखन ने लाखों हृदयों में ऐसे शोले भड़काए, जिनकी आँच में दासता की लौह-श्रृंखलाएँ भी पिघल गईं। मंडेला का करिश्माई नाम दक्षिण अफ्रीकी स्वाधीनता संघर्ष का पर्याय बन गया, जो आनेवाली पीढ़ियों के लिए प्रेरणा का अजस्र स्रोत बना रहेगा।

रोहिल्लाहला (नेल्सन) मंडेला का जन्म 18 जुलाई, 1918 को दक्षिण अफ्रीका के ट्रांस्की क्षेत्र के मैजो गाँव में हुआ था। यह मबाशे नदी के किनारे बसा छोटासा गाँव था। पहाड़ियों से घिरे, खूबसूरत वादियों व हजारों झरनोंवाले इस इलाके में प्रकृति ने अपनी सुंदरता दिल खोलकर बिखेरी थी। आधुनिक विश्व की हलचलों, आपाधापी, शोर-शराबे और उठा-पटक से बेखबर

शांत, एकांत क्रीड़ा-स्थली, जहाँ मंडेला के बचपन ने आजादी-ही-आजादी देखी-स्वच्छंद विचरने की आजादी, संगी-साथियों के साथ नदी किनारे हुड़दंग मचाने और शरारतें करने की आजादी, खुली हवा में जी भरकर साँस लेने की आजादी, जिसमें किसी तरह की घुटन का एहसास न था। उत्पीड़न, अन्याय, कदम-कदम पर रुकावटों की चुभन क्या होती है, इससे बेलाग सीधी-सादी जिंदगी, जिसे बालक मंडेला ने जी भरकर जिया।

मंडेला घराना

मंडेला परिवार का संबंध राजघराने से था। ये खोसा जाति के थे। इनका कबीला थैंबू कहलाता था और वंश मदीबा। मदीबा लोगों को अत्यंत कुलीन माना जाता था। कहा जाता था कि थैंबी जाति का संबंध पिछली 20 पीढ़ियों से सीधा राजा ज्वाइड से था। उनके परदादा ग्यूबेनगूका को थैंबू कबीले को संगठित करने का श्रेय प्राप्त था। सन् 1832 में उनका निधन होने पर उनके दादा ने भी राजा की उपाधि पाई। इस राजघराने की एक शाखा से संबंधित होने के कारण उनके पिता भी परंपरानुसार मैजो के स्थायी मुखिया थे।

थैंबू कबीले के लोग पहले ड्रैकंसबर्ग के पहाड़ों की वादियों में बसे हुए थे। फिर वे 16वीं सदी में समुद्र के किनारे आ बसे। खेतीबाड़ी और पशुपालन उनकी आजीविका के मुख्य साधन थे। ये लोग संभ्रांत थे, अपने गौरवशाली अतीत के प्रति सजग थे। कुलीनता इनके रक्त में थी। इनको अपने पशुधन पर गर्व था, जो इनकी समृद्धि का परिचायक माना जाता था।

खोसा जनजाति का जीवन शांतिपूर्ण व समतल गुजर रहा था, लेकिन 17वीं सदी में यूरोपियनों के दक्षिण अफ्रीका आने से इनमें